International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 66-68

रामचरितमानस के संदर्भ में सामाजिक नियोजन

डॉ० पी० के० शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, पी.सी. बागला (पी.जी.) कालेज, हाथरस, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

समाज को संगठित व व्यवस्थित बनाए रखने हेतु विचारक सदैव जागरूक रहे हैं। कोई भी समाज पूर्णतः संगठित नहीं रहता – कुछ न कुछ समस्याऐं – व्याधिकीय तत्व सक्रिय रहते हैं जिसके फलस्वरूप समाज में अव्यवस्था पनपने लगती है जिसके निवारण हेतु नियोजित प्रयास किये जाते रहे हैं ताकि विकास एवं प्रगति के अवसर सभी को समान रूप से सुलभ हो सकें। समस्याग्रस्त समाज को पुनर्गठित कर प्रगति एवं विकास के पथ पर अग्रसर करने के लिए सामाजिक नियोजन सदैव अपेक्षित रहा है। विचारकों की मान्यता है कि अनियोजित समाज कभी भी समस्या विमुक्त नहीं हो पाता।

सामाजिक नियोजन एक सार्वभौम अवधारणा है– जो योजनाबद्ध आधार पर समाज को प्रगति पथ पर अग्रसर व्यवस्थित बनाए रखने का प्रयास करती है। नियोजन सामाजिक नीतियों के क्रियान्वयन की एक विधि है। यथार्थ ''सामाजिक नियोजन सामाजिक नीतियों एवं मान्यताओं के अनुरूप उपलब्ध संसाधनों को संगठित कर सामाजिक पुनर्निमाण एवं प्रगति के लक्ष्य प्राप्ति हेतु योजनाओं के कार्यान्वयन की विधि है।'' स्पष्ट है कि ''सामाजिक नियोजन किसी भी समाज की विभिन्न शक्तियों और संसाधनों को जनसामान्य के हित एवं कल्याण के लिए नीतियों के कार्यान्वयन की विधि है। यह एक ऐसा यंत्र या कार्यविधि है जो अच्छा परिणाम प्राप्त करने के लिए एक संगठित व उद्देश्यपूर्ण कार्य करने का तरीका है।''1

सामाजिक नियोजन को निम्नलिखित विशेषताओं के संदर्भ में समझा जा सकता है

- सामाजिक नीति के अनुरूप नियोजन के स्पष्ट लक्ष्य।
- उपलब्ध संसाधनों के सर्वेक्षण के आधार पर लक्ष्योन्मुखी कार्ययोजना।
- योजना के कार्यान्वयन हेतु शक्ति, धन आदि की व्यवस्था।
- नियोजन के कार्यान्वयन हेतु शक्तिशाली एवं कुशल राजनीतिक संगठन एवं नेतृत्व।

स्पष्ट है कि सामाजिक नियोजन लक्ष्योन्मुखी सचेत प्रयास है। सामाजिक पुनर्गठन एक प्रगति का साधन है। समाज में व्याप्त बुराइयों, समस्याओं के निवारण का प्रयास ही नहीं करता अपितु उनसे बचने के लिए भी सामाजिक नियोजन आयोजित किया जाता है। सेमुअल कोइनिंग की दृष्टि में आधुनिक नियोजन के मान्य उद्देश्य इस प्रकार हैं–2

- अपव्यय और दरिद्रता का उन्मूलन
- शारीरिक और मानसिक रोगों की रोकथाम
- सभी प्रकार की बुराईयों के सामाजिक साधनों की समाप्ति और व्यक्तियों को और अधिक स्वतन्त्रता।

आपकी दृष्टि में सामाजिक नियोजन का उद्देश्य मनुष्य को सुखी जीवन व्यतीत करने में सहायता करना भी है।3

सामाजिक नियोजन के स्थायी उद्देश्यों के प्रति विचारक आश्वस्त नहीं रहे क्योंकि समाज और उसकी संरचनात्मक इकाइयों की प्रकृति सदैव परिवर्तनशील रही हैं– अतः परिवर्तित समाज को उसकी आवश्यकताओं के अनुरूप ढालना सामाजिक नियोजन का लक्ष्य रहा है जिस कारण नियोजन की प्रकृति एवं स्वरूप में भी भिन्नता लक्षित होती रही है। फिर भी अधिकांश विचारकों की दृष्टि में सामाजिक नियोजन का उद्देश्य सामाजिक समस्याओं का निवारण, सामाजिक पुनर्निर्माण एवं पुनर्रचना है। वह समाज के पिछड़ेपन को दूर करने का एक वैज्ञानिक और व्यवस्थित प्रयास है।[4]

के.ए. भट्टाचार्य के अनुसार नियोजन दो प्रकार की क्रियाओं – सामाजिक व आर्थिक की ओर गतिशील होता है। इस प्रकार उसके दो प्रमुख उद्देश्यों को अंकित किया जा सकता है–

1. आर्थिक प्रगति को प्राप्त करना
2. सामाजिक न्याय के साथ इस प्रगति में सन्तुलन बनाए रखना।5

कार्ल मैन्हीम सामाजिक नियोजन के निम्न उद्देश्यों का उल्लेख करते हैं–

1. स्वतन्त्रता के लिए नियोजन
2. समृद्धता के लिए नियोजन
3. सामाजिक लाभ के लिए नियोजन
4. सामाजिक दूरी के विनाश के लिए नियोजन
5. व्यक्तित्व विकास के लिए नियोजन
6. सामाजिक नियन्त्रण के लिए नियोजन
7. सांस्कृतिक मूल्य एवं आदर्शों के लिए नियोजन
8. केन्द्रीकरण एवं विकेन्द्रीकरण के मध्य संतुलन हेतु नियोजन।

यथार्थतः देखा जाए तो नियोजन का प्रमुख उद्देश्य समाज की सुख समृद्धि के साथ–साथ नागरिकों को समता व सामाजिक न्याय दिलाना है ताकि व्यक्ति और समाज संगठित रह सकें – व्यवस्था एवं प्रगति को बनाए रख सकें।

विचारक इस तथ्य को प्रतिपादित करते हैं कि प्रत्येक समाज के अपने मूल्य नियोजन के साध्य और उद्देश्यों के निर्माण में सहायक होते हैं।6

कवि तुलसी भी एक विचारक के रूप में इन लक्ष्यों को रामराजकालीन सामाजिक मूल्यों के संदर्भ में निरूपित करते हैं। उनकी सामाजिक नीति समतामूलक व प्रजातांत्रिक है जो युगीन सामाजिक समस्याओं के निवारण हेतु क्रियाशील होती है एक नियोजित प्रारूप के आधार पर समता, सामाजिक न्याय एवं सामाजिक सुरक्षा प्रदान करना, सामाजिक नीति का लक्ष्य है जो सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक जीवन के विविध पक्षों को प्रभावित करती है, पुनर्गठित करती है साध्य और साधनों में सामंजस्य स्थापित कर।

रामचरितमानस के गहन विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि राज्य

और नेतृत्व संगठित प्रयास के द्वारा आर्थिक विकास की ओर सक्रिय हुआ है। प्राकृतिक संसाधनों के उचित दोहन एवं उपयोग से अभाव, दरिद्रता व विषमता का निवारण कर सभी को सुख एवं समृद्धि का लाभ प्रदान करता है–

'नहिं दरिद्र कोऊ दुखी न दीना'7 तथा 'राम प्रताप विषमता खोई'8। रामराजकालीन सामाजिक नीति एवं सामाजिक नियोजन का लक्षण समाज में आर्थिक–सामाजिक सांस्कृतिक विकास के साथ–साथ समानता स्थापित करना है।

सामाजिक नियोजन की आवश्यकता–

रामचरितमानस वर्णित समाज राम के सिंहासन पर विराजमान होने से पूर्व संक्रमित लक्षित होता है। अनेक सामाजिक समस्याऐं – आतंक, अभाव, अशिक्षा, असमानता, अपराधी व हिंसक प्रवृत्तियॉ, असुरक्षा आदि लक्षित होती हैं जिनकी चुनौती राज्य के समक्ष है। इनका समाधान करने हेतु राम सक्रिय होते हैं– सुविचारित एवं सुनियोजित नीति एवं कार्यक्रम के आधार पर विचारक इस तथ्य को स्वीकार करते है कि ''सभ्यता के प्रारम्भ से ही सामाजिक नियोजन का प्रयोग हो रहा है''9 रामराज्य भी इसका अपवाद नहीं।

'यर्थाथतः सामाजिक नियोजन सामाजिक प्रगति का साधन है'10 सामाजिक नियोजन मानव के विकास को निरन्तरता प्रदान करने की प्रक्रिया है एतदर्थ वह समाज की व्यवस्था, पुनर्निमाण एवं पुनर्गठन हेतु सदैव आवश्यक रहा है। दरिद्रता के उन्मूलन, रोगों की रोकथाम, सामाजिक बुराईयों एवं समस्याओं के निवारण आदि की दृष्टि से आवश्यक रहा है। मानव के सुखी एवं समृद्ध जीवन हेतु सामाजिक नियोजन सदैव अपेक्षित रहा है, रामचरितमानस वर्णित समाज भी इस तथ्य की पुष्टि करता है।

रामचरितमानस में कवि तुलसी उन तथ्यों का उल्लेख करते हैं जो सामाजिक नियोजन की आवश्यकता को प्रकट करते हैं यथा– धर्म का प्रभाव कम होना, तामसी प्रवृतियों की वृद्धि, विस्तार से धर्म का ह्रास – सारे धर्मों को विपरीत पृथ्वी का देखना– 'सकल धर्म देखहिं बिपरीता'' ''दुष्ट एवं अपराधी प्रवृत्तियों के विस्तार – 'बाढ़े खल बहुचोर जुआरा'12 पारिवारिक संक्रमण – 'मानहिं मातु पिता नहिं देवा'13 आतंक – 'परम सभीत धरा अकुलानी'14 सम्पूर्ण पृथ्वी की व्याकुलता पृथ्वी की ईश्वर से प्रार्थना तथा समस्याओं के निवारण हेतु प्रभु के अवतरित होने की घोषणा 'हरिहउ सकल भूमि गरूआई'15 आदि से स्पष्ट होता है कि समाज में अनेक समस्याऐं विद्यमान थीं जिनके निवारणार्थ सामाजिक नियोजन आवश्यक था।

रामचरितमानस में सामाजिक नीति का उल्लेख जीवन में प्रत्येक पक्ष पर हुआ है परन्तु सामाजिक नियोजन जैसी अवधारणा का प्रमुख तुलसी ने नहीं किया है परन्तु उसकी झलक कवि के विभिन्न कथनों से स्पष्ट झलकती है जो नियोजित प्रयासों का बोध कराते हैं साथ ही सामाजिक व्यवस्था एवं प्रगति के हेतु नियोजन की आवश्यकता का एहसास कराते हैं। राम के सिंहासनरूढ़ होते ही पृथ्वी के शोक का हरण अर्थात् समस्याओं एवं संकेतों का निवारण, विषमता का खोना, सभी का शिक्षित होना, अविद्या का नाश, दरिद्रता का समापन आदि कथन उत्तरकाण्ड में हैं जो इस ओर संकेत करते हैं कि नियोजित एवं सुविचारित नीति के कार्यान्वयन का परिणाम है।

सामाजिकनियोजन का आयोजन किसी व्यक्ति या समूह विशेष द्वारा सामान्यतः ही हो सकता है। यद्यपि सुधारवादी संगठन, समितियॉ, समुदाय आदि भी इस दिशा में सक्रिय रहे हैं परन्तु सामाजिक नियोजन के आयोजन, संचालन व निर्देशन हेतु केन्द्रीय शक्ति राज्य की सभी अपेक्षा रखते हैं। जनशक्ति के साथ–साथ राज्यनीति भी सामाजिक नियोजन की सफलता हेतु आवश्यक है।

यथार्थतः राज्य सामाजिक नियोजन की एक अधिकृत एजेन्सी है। वह उपयोगी सामाजिक नीतियों के निर्माण, कार्यान्वयन हेतु योजना का निर्माण नियोजन हेतु साधनों का संगठन एवं प्रयोग में सक्षम हैं। शासन, प्रशासन अधिकारियों के साथ–साथ जनशक्ति का सहयोग इस हेतु वह प्राप्त करता है। राज्य का जनतांत्रिक नियन्त्रण सामाजिक नियोजन की सफलता हेतु आवश्यक है। यही कारण है कि आज सामाजिक नियोजन हेतु राज्य के दायित्व में पर्याप्त वृद्धि हुई है साथ ही सक्रियता भी।

इस प्रकार कल्याणकारी राज्य–राज्य शक्ति एवं जनशक्ति के माध्यम से अपनी समस्त जनता के पिछड़ेपन, अशिक्षा, असमानता, अभाव, बीमारी, बेकारी आदि समस्याओं से मुक्ति हेतु उपयुक्त नीति एवं योजना का निर्माण कर संसाधनों का जनहित में उपयोग करने का प्रयास करता है ताकि सामाजिक न्याय एवं समता जनता को सुलभ हो सके और वह सुखी व समृद्ध जीवन व्यतीत कर सकें, यह उत्तरदायित्व निर्वाह केवल राज्य द्वारा ही सम्भव है। विचार कभी इस तथ्य की पुष्टि करते हैं।16

रामचरितमानस से यह तथ्य स्पष्ट होता है कि राज्य नीति के कार्यान्वयन हेतुसचेत प्रयास करता है यद्यपि सामाजिक नियोजन जैसी अवधारणा का तुलसी ने प्रयोग नहीं किया है परन्तु विकास एवं प्रगति के जिन परिणामों का अंकन अपनी अभिव्यक्ति में किया है वे बिना उचित सामाजिक नियोजन के सम्भव नहीं हो सकते। जनकल्याण हेतु जागरूक एवं क्रियाशील रहना राज्य का दायित्व है, अनेक धर्मों में से एक धर्मप्रजा की सुख समृद्धि के लिए प्रयास करना भी है–

'भूप धरम जे बेद बखाने। सकल करह सादर सुख माने।।17

राजा प्रतापभानु, राजाओं के जो धर्म वेदों में वर्णित हैं, उन सबका पालन करता था, दायित्व समझकर। समाज कल्याण हेतु तत्पर भी – 'दिन प्रति देइ विविध विधि दाना'18 वह वेद वर्णित नीति के अनुसार प्रजा का पालन करता है – अपने दायित्व का निर्वाह करता है–

'प्रजापाल अति बेद विधि, कतहुँ नहीं अघ लेस।19

राजा प्रतापभानु की शक्ति पाकर अर्थात् नियोजित प्रयास से धरती धन–धान्य से परिपूर्ण लक्षित होती है–

'भूप प्रतापभानु बल पाई। काम धेनु भै भूमि सुहाई।।20

और जिसका परिणाम प्रजा का सुखी व समृद्ध जीवन है जो राजा के सद्प्रयासों व नियोजित कार्य का प्रतिफल है।

अयोध्या के राजा राम नीति व एकता मंगल प्रदाता हैं– यह तथ्य रामचरितमानस से स्पष्ट होता है कि वे मुनियों को आनन्द देने वाले तथा पृथ्वी के भार को उतारने वाले उदार व्यक्तित्व के हैं– पृथ्वी के भारहरण हेतु ही अवतरित हुए हैं– पृथ्वी का भार आसुरी व तामसी आतंक, व्याधि उत्पन्न करने वाली समस्याओं – दरिद्रता, अशिक्षा, असमानता आदि के निवारण हेतु नेतृत्व ग्रहण करते हैं– इतना भार, कार्य बिना सुविचारित नीति और नियोजन के असम्भव ही है। तुलसी कहते हैं–

'मुनि रंजन भंजन महि भारहि। तुलसीदास के प्रभुहि उदारहि''21

यही कारण है कि राम के प्रताप से तीनों लोकों में प्रकाश का

प्रसार शोक, अविद्या, मद, मोह, मत्सर आदि मानसिक विकारों का लोप होना स्वाभाविक ही है– व्यक्ति और समाज दोनों ही नीति और नियोजन के सुखद परिणामों से लाभान्वित होते हैं–

'जब ते राम प्रताप खगेसा। उदित भयउ अति प्रबल दिनेसा।।22

इस प्रकार राज्य जन कल्याणकारी नीति और नियोजन के कार्यान्वयन एवं फलप्रद परिणामों के प्रति पहल करता है– रामचरितमानस से यह तथ्य प्रकट होता है।

निष्कर्ष–

- सामाजिक नीति एवं नियोजन का लक्ष्य मात्र आर्थिक विकास ही नहीं बल्कि विविध सामाजिक संस्थाओं के संरचनात्मक एवं प्रकार्यात्मक पक्षका संतुलित विकास भी है।
- सामाजिक नीति एवं नियोजन की सफलता हेतु आवश्यक है कि समाज में क्रम विभाजन योग्यता पर आधारित हो।
- सर्वजन हिताय एवं सर्वजन सुखाय की भावना पर आधारित समतामूलक समाज नीति का निर्माण समाज कल्याण का आधार है।
- नैतिक अनुशासन ही सामाजिक नियोजन के स्तर को बनाए रखने में सहायक हो सकते हैं।

सन्दर्भ

1. Planning is thus only means, a tool and a method of action an organized and purposive way of doing things to a chieve better results. K.N. Bhattacharyya: Indian Plan: Generalist approach, Asia Bombay, 1963, p12.
2. सेमुअल कोइनिंग : समाजशास्त्र, पृष्ठ 266
3. वही, पृष्ठ – 266
4. "..... It can remove the backwardness of the country in a scientificor systematic manner". S.C. Gupta: Sociology of Planning in India, Crown Publication, New Delhi, 1989, p35.
5. Planning consits of activities of two types social and economic. The objects of planning in other words, are two fold- (a) to achieve economic progress and (b) to balance such progress with social jsutice. K.N. Bhattacharayya: Indian Plan, p97.
6. Every community has its own setup of values which become the funda mental frame of reference for the determination of its own ends... objectives. S.C. Nandwani: Planning and development in India, Cosmopolitan Publishing House, Dhagwara 1965, p9.
7. उ0का0 21/6
8. उ0का0 20/8
9. सेमुअल कोइनिंग : समाजशास्त्र, पृष्ठ 266
10. वही पृष्ठ 260
11. बा0का0 184/6
12. बा0का0 184/1
13. बा0का0 184/2
14. बा0का0 184/4
15. बा0का0 187/7
16. The Political Structue of a country also determines the dimensions of the frame work fo Planning. SC. Nandwani: Planning and Development in India, p2.
17. बा0का0 155/5
18. बा0का0 155/6
19. 19 बा0का0 दोहा 153
20. बा0का0 155/1
21. उ0का0 30/10
22. उ0का0 31/1